International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-1 Jan-Feb-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

प्रारंभिक बचपन शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी और स्कूल प्रबंधन

Dr. Lalmuanawma Sailo
Assistant Professor
Mizoram Hindi Training College
Durtlang North, Aizawl, Mizoram

सार

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECE) की सफलता और विकास में माता-पिता की भागीदारी एक महत्वपूर्ण कारक है। यह अध्ययन छोटे बच्चों के समग्र विकास पर माता-पिता की भागीदारी और स्कूल प्रबंधन प्रथाओं के प्रभाव की खोज करता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है, जिसके लिए परिवारों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सक्रिय सहयोग की आवश्यकता होती है ताकि एक पोषण वातावरण को बढ़ावा दिया जा सके। माता-पिता की भागीदारी के लिए एक समावेशी और सहायक संस्कृति बनाने में स्कूल प्रबंधन की भूमिका की भी जांच की गई है। शोध में माता-पिता की भागीदारी के प्रमुख रूपों की पहचान की गई है, जिसमें घर पर सीखने की गतिविधियाँ, स्कूल के कार्यक्रमों में भागीदारी, स्वयंसेवा और शिक्षकों के साथ संचार शामिल हैं। इसके अलावा, यह चर्चा करता है कि कैसे अच्छी तरह से समन्वित स्कूल प्रबंधन स्पष्ट संचार चैनल स्थापित करके, विश्वास को बढ़ावा देकर और माता-पिता के लिए पाठ्यक्रम और शैक्षिक अनुभवों में योगदान करने के अवसर पैदा करके इस भागीदारी को बढ़ा सकता है। अध्ययन माता-पिता की भागीदारी के लाभों पर प्रकाश डालता है, जैसे कि बेहतर शैक्षणिक परिणाम, सामाजिक कौशल और बच्चों की भावनात्मक भलाई। यह चुनौतियों को भी संबोधित करता है, जिसमें माता-पिता के लिए समय की कमी, सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ और सांस्कृतिक अंतर शामिल हैं जो भागीदारी को प्रभावित कर सकते हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि स्कूलों को निरंतर अभिभावकीय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए लचीले, समावेशी और सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने चाहिए, जिससे बच्चे के समग्र विकास में योगदान मिल सके। माता-पिता और स्कूल प्रबंधन के बीच सहयोग पर ध्यान केंद्रित करके, इस शोध का उद्देश्य प्रारंभिक बचपन की शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और रणनीतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

मुख्य शब्द: *बचपन शिक्षा, माता-पिता, स्कूल प्रबंधन*

परिचय

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECE) बच्चे के विकास में एक आधारभूत भूमिका निभाती है, जो उनके प्रारंभिक वर्षों के दौरान उनकी संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताओं को आकार देती है। जैसा कि शोध से पता चला है, बच्चे के जीवन के शुरुआती वर्ष मस्तिष्क के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि होती है, जिससे इस चरण के दौरान शिक्षा और देखभाल की गुणवत्ता महत्वपूर्ण हो जाती है। हालाँकि, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की प्रभावशीलता न केवल पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों पर निर्भर करती है, बल्कि प्रमुख हितधारकों: माता-पिता और स्कूल प्रबंधन के बीच सहयोग पर भी निर्भर करती है। माता-पिता की भागीदारी एक बच्चे की शैक्षणिक और विकासात्मक सफलता में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में उभरी है। माता-पिता अपने बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं, और

औपचारिक स्कूली शिक्षा शुरू होने के बाद भी घर का माहौल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहता है। माता-पिता को अपने बच्चे की शिक्षा में शामिल करने से स्कूल में बच्चे की प्रेरणा, व्यवहार और प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। घर पर पढ़ना, स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लेना और शिक्षकों के साथ खुला संवाद बनाए रखना जैसी गतिविधियाँ कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा का समर्थन कर सकते हैं। साथ ही, माता-पिता की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने में स्कूल प्रबंधन भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूल के नेता और शिक्षक एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए जिम्मेदार हैं जो माता-पिता के साथ सहयोग को प्रोत्साहित करता है और उन्हें शैक्षिक प्रक्रिया में भागीदार के रूप में पहचानता है। प्रभावी स्कूल प्रबंधन में संचार चैनल स्थापित करना, माता-पिता को स्कूल की गतिविधियों में शामिल होने के अवसर प्रदान करना और ऐसे संसाधन प्रदान करना शामिल है जो माता-पिता को घर पर अपने बच्चे की पढ़ाई में सहायता करने में मदद करते हैं। माता-पिता की भागीदारी के मान्यता प्राप्त लाभों के बावजूद, विभिन्न बाधाएँ इसमें बाधा डाल सकती हैं, जैसे कि सामाजिक-आर्थिक कारक, सांस्कृतिक अंतर और समय की कमी। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए स्कूलों से अभिनव प्रबंधन प्रथाओं की आवश्यकता है, जो समावेश और अनुकूलनशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देती हैं। इस पत्र का उद्देश्य प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी और स्कूल प्रबंधन के प्रतिच्छेदन का पता लगाना है, जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि परिवारों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग सीखने के परिणामों और बच्चे के विकास को कैसे बढ़ा सकता है। वर्तमान शोध के विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन माता-पिता को शामिल करने और स्कूलों और परिवारों के बीच एक मजबूत साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए सबसे प्रभावी रणनीतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, जो अंततः बच्चे के विकास और भविष्य की सफलता को लाभान्वित करेगा।

इसके अलावा, बचपन की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी की गतिशीलता विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में भिन्न होती है। कुछ समुदायों में, माता-पिता के पास काम की प्रतिबद्धताओं, भाषा संबंधी बाधाओं या सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों जैसे बाहरी कारकों के कारण अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सीमित अवसर या संसाधन हो सकते हैं। ऐसे मामलों में, सहायक, लचीली रणनीतियाँ बनाने में स्कूल प्रबंधन की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है जो इन बाधाओं को दूर करती हैं और समान भागीदारी को बढ़ावा देती हैं। शोध ने लगातार दिखाया है कि जब माता-पिता अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, तो लाभ अकादमिक उपलब्धि से कहीं आगे तक फैलते हैं। जिन बच्चों के माता-पिता सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, उनके सामाजिक कौशल बेहतर होते हैं, उनका व्यवहार बेहतर होता है, उनका आत्म-सम्मान अधिक होता है और सीखने की प्रेरणा अधिक होती है। माता-पिता की भागीदारी को अनुपस्थिति और ड्रॉपआउट दरों में कमी के साथ-साथ छात्रों के बीच अपनेपन और समुदाय की मजबूत भावना से भी जोड़ा गया है।

ये सकारात्मक प्रभाव एक सहयोगी वातावरण को बढ़ावा देने के महत्व को उजागर करते हैं जहाँ माता-पिता और शिक्षक एक बच्चे के समग्र विकास का समर्थन करने के लिए एक साथ काम करते हैं। शैक्षिक नीति और अभ्यास के एक प्रमुख चालक के रूप में स्कूल प्रबंधन को ऐसे कार्यक्रम और पहल बनाने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए जो माता-पिता की भागीदारी को प्रोत्साहित और बनाए रखें। इसमें माता-पिता को अपने बच्चे की शिक्षा के साथ सार्थक रूप से जुड़ने के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन प्रदान करना, अलग-अलग शेड्यूल वाले माता-पिता के लिए लचीले भागीदारी विकल्प प्रदान

करना और एक समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है जो विविध पारिवारिक पृष्ठभूमि का सम्मान और महत्व देती है। इसके अतिरिक्त, स्कूलों और अभिभावकों के बीच मजबूत संचार आवश्यक है।

स्कूलों को माता-पिता को अपने बच्चे की प्रगति, स्कूल की गतिविधियों और सीखने की प्रक्रिया में उनके योगदान के तरीकों के बारे में सूचित करने की आवश्यकता है, चाहे अभिभावक-शिक्षक बैठकों, कार्यशालाओं या नियमित अपडेट के माध्यम से। कई सफल प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रमों में, माता-पिता की भागीदारी स्कूल के पाठ्यक्रम और दैनिक प्रथाओं में अंतर्निहित है। ये कार्यक्रम अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में माता-पिता को शामिल करते हैं, उन्हें कक्षा की गतिविधियों में योगदान करने के अवसर प्रदान करते हैं, और प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं जो माता-पिता को घर पर अपने बच्चे की शिक्षा को बढ़ाने में मदद करते हैं। जब स्कूल परिवारों के साथ मजबूत संबंध बनाने में निवेश करते हैं, तो वे बच्चे के लिए एक अधिक समग्र शैक्षिक अनुभव बनाते हैं, जहाँ सीखना एक साझा जिम्मेदारी बन जाती है। इस शोधपत्र का उद्देश्य माता-पिता की भागीदारी की बहुमुखी प्रकृति और इस सहयोग को बढ़ाने में स्कूल प्रबंधन की भूमिका का पता लगाना है। सर्वोत्तम प्रथाओं, चुनौतियों और अभिनव समाधानों की जांच करके, अध्ययन इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा कि स्कूल कैसे अपने बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा में माता-पिता को प्रभावी ढंग से शामिल कर सकते हैं और एक सहायक, संपन्न सीखने का माहौल बना सकते हैं। प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के परिणामों को अनुकूलित करने और बच्चों को भविष्य की शैक्षणिक और जीवन की सफलता के लिए तैयार करने के लिए इन गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है। बाद के खंडों में, अध्ययन विभिन्न प्रकार की माता-पिता की भागीदारी, इस जुड़ाव को बढ़ावा देने में स्कूल प्रबंधन की भूमिका और प्रारंभिक बचपन की शिक्षा पर इन प्रयासों के प्रभाव पर गहराई से चर्चा करेगा। विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स से साहित्य और केस स्टडीज की व्यापक समीक्षा के माध्यम से, यह शोध माता-पिता और स्कूलों के बीच प्रभावी सहयोग के माध्यम से प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में सुधार करने के लिए प्रतिबद्ध शिक्षकों, स्कूल नेताओं और नीति निर्माताओं के लिए व्यावहारिक सिफारिशें पेश करने का लक्ष्य रखेगा।

उद्देश्य

1. माता-पिता की भागीदारी को व्यवहार में लाने के तरीकों पर अध्ययन करना।
2. बच्चों की शिक्षा और माता-पिता के मूल्यों पर अध्ययन करना।

बच्चों के लिए शिक्षा और माता-पिता के मूल्य

जीवन को अंकित मूल्य पर लेना एक ऐसी चीज है जो एक बच्चा करता है। इस तथ्य पर ध्यान देने के बाद कि भौतिक और आभासी सीखने के चरणों का बच्चे के शुरुआती शैक्षिक विकास पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, जो कि मामला है। नीचे कुछ ऐसी चीजें सूचीबद्ध हैं जिन पर बच्चा ध्यान देता है और परिणामस्वरूप, ग्रहण करता है, जो अंततः उसके प्रारंभिक वर्षों और शायद उसके पूरे जीवन को आकार देगा:

माता-पिता का संबंध

एक बच्चे के माता-पिता के बीच का बंधन एक ऐसी चीज है जिसके बारे में हर बच्चा हमेशा जागरूक रहेगा। इसका एक परिणाम यह है कि बच्चा माता-पिता की विशेषताओं को समझेगा और आत्मसात करेगा, भले ही माता-पिता खुश हों या लगातार एक-दूसरे से असहमत हों, अगर माता-पिता अनुपस्थित हैं, चाहे वे अकेले हों, या चाहे वे साथ रहते हों। बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा पर सीधा प्रभाव पालन-पोषण शैली के साथ-साथ उनके माता-पिता-बच्चे के संबंध की वर्तमान स्थिति, चरण या वास्तविकता से पड़ेगा।

माता-पिता का प्रभाव

यदि वे उत्कृष्ट माता-पिता बनने के लिए प्रयास करने के लिए तैयार हैं, तो किसी भी शैक्षिक या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के माता-पिता अपने बच्चे के जीवन पथ को अनुकूल रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। बचपन के दौरान बच्चे के माता-पिता द्वारा किए गए हर शब्द और कार्य बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान करते हैं, जो अंततः यह निर्धारित करता है कि बच्चा समाज में कैसे फिट होगा। यह केवल इतना है कि कुछ माता-पिता अपने बच्चों को अनुकरण करने के लिए उपयुक्त उदाहरण प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं। जैसे-जैसे बच्चा अपने आस-पास की दुनिया को समझना शुरू करता है, वह अपने आस-पास के लोगों के कार्यों को देखना, समझना और व्याख्या करना शुरू कर देता है। अपने माता-पिता के कार्यों, रणनीतियों और दृष्टिकोणों के अवलोकन के माध्यम से वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वे आदर्श हैं और उनकी नकल करने का प्रयास करता है। आप जिस तरह से खाते हैं, जिस तरह से बैठते और बोलते हैं, आप टीवी पर कौन से शो देखना पसंद करते हैं, आप जिस तरह से पढ़ते और कपड़े पहनते हैं, आप किस तरह से संगीत की ओर आकर्षित होते हैं, आप किस हद तक सिद्धांतों से परिचित हैं, आपकी सामान्य रुचियाँ, खेलकूद, इत्यादि सभी आदतों के उदाहरण हैं। जब भी इनमें से कोई भी स्थिति होती है, तो बच्चा माता-पिता द्वारा दिखाए गए तौर-तरीकों, दृष्टिकोणों और व्यवहारों को आसानी से आत्मसात कर लेता है और अपना लेता है। प्रभाव के वाहकों के कुछ उदाहरण माता-पिता द्वारा की गई हरकतें और टिप्पणियाँ हैं, भले ही वे सीधे बच्चे पर निर्देशित न हों, और इसी तरह की अन्य चीज़ें। एक बच्चे द्वारा अपने माता-पिता को जो करते या कहते हुए देखा और सुना है, उसकी नकल करने का प्रयास करना प्रभाव के वाहक के रूप में कार्य करने की क्षमता रखता है। इस तथ्य के परिणामस्वरूप कि माता-पिता ने आम तौर पर इन बातों को पहले ही बता दिया है, बच्चे को ऐसी बातें कहते हुए सुनना असामान्य नहीं है जिन्हें वह जरूरी नहीं समझता।

माता-पिता की शिक्षा

इस कारण से, माता-पिता के लिए अपने बच्चों को ज्ञान और अनुभव प्रदान करने के लिए सचेत प्रयास करना आवश्यक है। बच्चे के आवश्यक मूल्यों, मूलभूत विचारों और मुद्दों और घटनाओं के ज्ञान के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अधिकांश समय, यह एक अर्ध-औपचारिक शिक्षा होती है जिसमें माता-पिता अपने बच्चे को कई तरह के मुद्दों के बारे में सिखाने का प्रयास करते हैं, जिसमें ईश्वर, विनम्रता, मित्रता और वफादारी, अन्य संभावित विषय शामिल हैं। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चे के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, वे सभी खाली किताबों की तरह होते हैं, और उनकी मानसिक रचना के पन्नों

पर जो बातें लिखी होती हैं, वही बातें उन पर लिखी होती हैं। यदि माता-पिता खाली किताब को पूरा नहीं भरते हैं, तो कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा करेगा। यदि बच्चा ऐसे विचारों के संपर्क में आता है जो सटीक नहीं हैं, तो संभावना है कि वह अपने पूरे जीवन में ऐसी मान्यताओं को धारण करना जारी रखेगा। इसके परिणामस्वरूप, यह अनिवार्य है कि माता-पिता अपने बच्चों के विकसित होते विचारों पर नज़र रखने और किसी भी ऐसे विचार को खत्म करने के लिए एक ठोस प्रयास करें जो हानिकारक प्रतीत होते हैं, इससे पहले कि उन्हें अपना प्रभाव मजबूत करने का अवसर मिले।

माता-पिता की अभिव्यक्तियाँ

जब भी कोई बच्चा किसी खास व्यवहार में शामिल होता है, तो वह अपनी इच्छाओं, इच्छाओं और आत्म-संरक्षण की इच्छा (जो मौजूद तो होती है लेकिन हमेशा व्यक्त नहीं होती) के प्रकाश में प्रतिक्रिया की जांच करता है। यह संभव है कि बच्चा फिर से वही काम करना चाहेगा या इसके विपरीत, वह इसे बिल्कुल भी न करने का फैसला कर सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह इसे कैसे समझता है। कम से कम जब तक वह अपने आचरण के पीछे के कारणों को नहीं समझता, तब तक वह उन कार्यों को स्वीकार करना चुनता है जिन्हें वह फायदेमंद मानता है और उन्हें अपने व्यक्तित्व और दिनचर्या में शामिल करता है। दूसरी ओर, वह उन व्यवहारों को अस्वीकार करना चुनता है जिन्हें वह बुरा मानता है। इसके मद्देनजर, माता-पिता को अपने बच्चों को हिंसक व्यवहार सिखाने के मामले में सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि इससे उनके बच्चों के खुद को देखने के तरीके पर हानिकारक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ने की संभावना है। एक बच्चे की कल्पना करें जो अपने माता-पिता को तब चिल्लाता है जब माता-पिता का दिन खराब होता है और बच्चे का सामना करने के लिए मुड़ता है। क्या माता-पिता बच्चे का सामना करने के लिए मुड़ेंगे?

यह संभव है कि ऐसा बच्चा अंततः अस्वीकार किए जाने या दंडित किए जाने के डर से, विशेष रूप से उस विशिष्ट माता-पिता द्वारा, पूरी तरह से ध्यान मांगना बंद कर दे। जिस काल्पनिक स्थिति पर हम चर्चा कर रहे हैं, उसमें दूसरा माता-पिता, जिसने कभी भी किसी तरह की नाराज़गी नहीं दिखाई, निस्संदेह बच्चे का सबसे पसंदीदा बन जाएगा। इस माता-पिता का बच्चे पर सबसे अधिक प्रभाव होगा और बच्चे द्वारा सामना की गई किसी भी गलतफहमी या मनोवैज्ञानिक क्षति को हल करने की सबसे अच्छी स्थिति में होगा। माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वे ऐसा वातावरण बनाएं जिसमें उनके बच्चे स्वतंत्र रूप से और बिना किसी बाधा के खुद को अभिव्यक्त कर सकें। बच्चे में विकसित हो रही किसी भी प्रतिकूल भावना को पहचानने के लिए यह आवश्यक है। इसके अलावा, यह अनुशंसा की जाती है कि माता-पिता आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करें और अपने बच्चों के आस-पास होने पर उनके चेहरे के भावों पर ध्यान दें। छोटी उम्र में, बच्चे के आस-पास के महत्वपूर्ण लोग संभावित भावनात्मक उत्तेजकों के प्रति जो दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं, उसका समान परिस्थितियों का सामना करने पर बच्चे की संभावित प्रतिक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि बच्चा इन वयस्कों को देखता है और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों और जिस तरह से वे खुद को और अपने विचारों को व्यक्त करते हैं, दोनों के संदर्भ में उनकी नकल करने के लिए प्रेरित होता है। छोटे बच्चे वयस्कों की तुलना में बहुत अधिक ग्रहण करते हैं और समझते हैं। जब वयस्क यह मानने की गलती करते हैं कि केवल बच्चा ही इसमें शामिल है, तो उन्हें कभी भी यह

नहीं मानना चाहिए कि बच्चा अंततः वही बात भूल जाएगा। छोटे बच्चों में दो साल की उम्र में हुई घटनाओं को याद रखने की प्रवृत्ति होती है, यहाँ तक कि बड़े होने और वयस्क बनने के बाद भी। बच्चा अपने माता-पिता की भावनाओं को समझने में सक्षम होता है, जिसमें उनके तनाव, हँसी, क्रोध, प्यार और उनके माता-पिता से संबंधित अन्य भावनाएँ शामिल हैं। बच्चा "चेहरे को पढ़ने" में सक्षम होता है, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं की व्याख्या करने में सक्षम होता है, और अपनी इच्छानुसार भाव और व्यवहार प्राप्त करने के लिए खुद को "ढालने" में सक्षम होता है।

माता-पिता की भागीदारी को व्यवहार में लाने की तकनीक

इस तथ्य के बावजूद कि माता-पिता की भागीदारी से जुड़ी चुनौतियाँ हैं, माता-पिता की भागीदारी और छात्र की उपलब्धि के बीच एक सुस्थापित संबंध है। माता-पिता की भागीदारी का बच्चों और उनके द्वारा जाने वाले स्कूलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस लेख के अगले तीन भागों में तीन प्रमुख तरीकों पर चर्चा की जाएगी जिनका उपयोग माता-पिता और शिशु शिक्षक अपने बच्चों की शिक्षा को बेहतर बनाने और घर से क्रेच तक एक सहज संक्रमण को सक्षम करने के लिए कर सकते हैं। इन युक्तियों का उपयोग उनके बच्चों की शिक्षा को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

शिक्षकों का रवैया

प्रत्येक कक्षा में, बच्चे कई तरह की भावनात्मक अवस्थाएँ प्रदर्शित करते हैं, उनकी विशिष्ट आवश्यकताएँ होती हैं, और उनकी रुचियाँ भी भिन्न होती हैं। शिशु प्रशिक्षकों के लिए शिशुओं की जटिल भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं को लगातार पहचान पाना कठिन होता है क्योंकि शिशु अपनी इच्छाओं और भावनाओं को मौखिक रूप से व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं। यह शिशु शिक्षा पेशेवरों के लिए एक चुनौती है। यदि प्रशिक्षक शिशुओं की असाधारण आवश्यकताओं को पूरी तरह से समझने में असमर्थ हैं, तो उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। परिणामस्वरूप, शिक्षकों के लिए अपने छात्रों के साथ एक मजबूत परिचितता विकसित करना और छोटे बच्चों के माता-पिता के साथ बातचीत करके उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह संभव है कि माता-पिता की भागीदारी पर शिक्षकों के दृष्टिकोण और दृष्टिकोण का प्रभाव पड़े। इस तथ्य के परिणामस्वरूप कि माता-पिता वे व्यक्ति हैं जो अपने बच्चों से सबसे अधिक परिचित हैं, उनके पास अपने बच्चे के बारे में प्रशिक्षकों को ज्ञान का खजाना प्रदान करने की क्षमता है। इसके परिणामस्वरूप स्कूल बोर्ड के लिए माता-पिता की भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है। इस तथ्य के कारण कि स्कूल बोर्ड कई चाइल्डकेयर सुविधाओं में मौजूद नहीं हो सकता है, शिक्षकों को माता-पिता की भागीदारी का आग्रह करना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षक अपने छात्रों की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी के विषय पर एक प्रस्तुति या सेमिनार आयोजित कर सकते हैं। इसमें शिक्षकों को परिवार की भागीदारी के महत्व के बारे में सिखाने की क्षमता है।

माता-पिता का रवैया

माता-पिता की अपने बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है (अलीमोहम्मदी एट अल., 2017; ब्रोंफेनब्रेनर, 1979; लैम्ब एट अल., 2002)। यह संभव है कि कुछ माता-पिता अपने बच्चों को छोड़ने और लेने के लिए केवल क्रेच सुविधा का उपयोग करेंगे क्योंकि उनके पास कोई और नहीं है जो उनके

काम में व्यस्त रहने के दौरान बच्चों की देखभाल कर सके। यह संभव है कि माता-पिता स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने और शिक्षकों के साथ लगातार संवाद बनाए रखने की अधिक संभावना रखते हैं यदि उन्हें यह धारणा है कि उनके दायित्व उनके बच्चों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह संभव है कि माता-पिता क्रेच सुविधा के निदेशक के साथ बैठकों में भाग लेने में सक्षम होंगे। इस सम्मेलन के दौरान, यह अनुशंसा की जाती है कि शिशु वर्षों के दौरान माता-पिता की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला जाए। यह उपकरण इस मायने में मददगार है कि यह शिक्षकों और माता-पिता के बीच माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के जीवन में निभाई जाने वाली भूमिकाओं की प्रासंगिकता के बारे में जागरूकता बढ़ाता है।

समय

प्रत्येक माता-पिता और शिक्षक के पास सीमित समय होता है। जो माता-पिता नौकरीपेशा हैं, उनके पास अक्सर केवल "छोड़ने" और "लेने" के समय का भुगतान करने के लिए वित्तीय साधन होते हैं। इसके अलावा, अपनी नौकरी से जुड़े कर्तव्यों के अलावा, चाइल्डकेयर केंद्रों के प्रशिक्षकों के पास कभी-कभी व्यक्तिगत प्रतिबद्धताएँ होती हैं जो उनका समय लेती हैं। इसलिए, भले ही माता-पिता और प्रशिक्षक दोनों ही माता-पिता की भागीदारी के महत्व से अवगत हों, फिर भी उनके लिए एक-दूसरे के साथ जानकारी साझा करना महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के पास परिवार की संपर्क सूची बनाने और माता-पिता को ईमेल भेजकर और उन्हें फ़ोन करके संवाद करने की क्षमता होती है। सुविधा में पूरे किए गए कामों की तस्वीरें साप्ताहिक ईमेल में शामिल की जा सकती हैं।

बच्चों की शिक्षा में माता-पिता को शामिल करने के लिए सक्रिय तरीके

यह अनुशंसा की जाती है कि दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी के लिए सक्रिय उपाय किए जाएं। इन दृष्टिकोणों को शिक्षा में परिवार की भागीदारी के स्तर के साथ-साथ स्कूल प्रशासन द्वारा माता-पिता को दी जाने वाली सहायता के बारे में चिंताओं को ध्यान में रखना चाहिए। पहली जांच के निष्कर्षों के अनुसार, ये रणनीतियाँ आधारित हैं। स्कूलों में चीजों की स्थिति शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी के छह तरीकों के विश्लेषण में परिलक्षित हो सकती है, और इन तरीकों को व्यवहार में लाना माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में अधिक शामिल होने के लिए प्रेरित करने का एक तरीका हो सकता है।

एक गर्मजोशीपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण शैक्षिक वातावरण स्थापित करें।

स्कूलों में अभिभावकों की रुचि जगाने के लिए, स्कूलों में माहौल जानबूझकर दोस्ताना होना चाहिए। स्कूल का माहौल विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले अभिभावकों के लिए शारीरिक रूप से आकर्षक होना चाहिए, जब वे पहली बार संस्थान में शामिल होते हैं। इस तथ्य के मद्देनजर कि दक्षिण अफ्रीका में छात्र विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं, यह जरूरी है कि कोई भी अभिभावक स्कूल से अलगाव की भावना का अनुभव न करे। अभिभावकों को यह धारणा नहीं रखनी चाहिए कि स्कूल एक बंद संस्थान है, जिससे उन्हें अपने बच्चों को वहां भेजने में चिंता हो। स्कूल में छात्रों के अभिभावकों को यह महसूस होना चाहिए कि स्कूल उनका है और वे वहां के हैं। स्कूल में एक अच्छा माहौल बनाने में योगदान देने के लिए प्रशासन जिम्मेदार है। विश्वास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, प्रिंसिपल को, एसएमटी के प्रमुख के रूप में अपनी

भूमिका में, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच मजबूत संबंध बनाने के साथ-साथ पारदर्शी संचार के लिए काम करना चाहिए। ग्राहक सेवा पर जोर देने के साथ-साथ प्रमुख कार्यालय-कर्मचारी क्षमताओं को सीखने और अभिभावकों, छात्रों और आगंतुकों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने के लिए, प्रशासनिक कर्मचारियों को पेशेवर विकास में भाग लेने की आवश्यकता है। यह हासिल करने के लिए आवश्यक है।

शिक्षकों को शिक्षा में अभिभावकों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करें

संचार पर केन्द्रित नियमित स्कूल प्रक्रियाओं की स्थापना तथा स्कूल और अभिभावकों के बीच भरोसेमंद और सुखद सम्बन्धों की खेती अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे शैक्षणिक प्रक्रिया में घर और स्कूल की भूमिका के सम्बन्ध में अभिभावकों के विचारों, भावनाओं और प्रश्नों के बारे में पूछें। अभिभावकों के साथ चर्चा के दौरान, अभिभावकों की भागीदारी पर चर्चा करने और उन युक्तियों के बारे में सोचने के लिए समय निर्धारित किया जाना चाहिए जो स्कूल के सम्बन्ध में अतीत में सफल रही हैं। एक स्कूल फ़ाइल का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है जो अद्यतित हो और जिसमें प्रशिक्षकों और अभिभावकों दोनों की टिप्पणियाँ हों कि क्या उपयोगी और कुशल है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच बेहतर सम्बन्धों को सुगम बनाने के लिए प्रशिक्षकों की क्षमताओं और योग्यताओं में सुधार करने के लिए, एक संसाधन बैंक बनाया जाना चाहिए जो स्कूल की आवश्यकताओं के अनुकूल हो। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को अभिभावकों को सफलतापूर्वक संलग्न करने और परिवारों के साथ उपयोगी सहयोग को सुगम बनाने के लिए स्कूल संसाधनों में सुधार करने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाने की आवश्यकता है। सबसे अच्छा संभव उत्तर शिक्षकों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने और अपने सहकर्मियों से सीखने का अवसर प्रदान करना होगा। माता-पिता को उनके बच्चों की शिक्षा में शामिल करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रणनीतियों में निरंतर संशोधन किया जाना चाहिए। निष्कर्ष रूप में, समुदाय, प्रशिक्षकों और छात्रों के परिवारों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए सहभागिता की रणनीतियाँ विकसित करना आवश्यक है। यह अध्ययन करना महत्वपूर्ण है कि माता-पिता अपने बच्चों को क्या सिखाना चाहते हैं, वे इसे कैसे देखते हैं, उनका परिवार कैसा है और वे किस संस्कृति में रहते हैं। माता-पिता की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बच्चे के शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए कई तरह की सिफारिशें सुलभ होनी चाहिए। माता-पिता के परिवार की परिस्थितियों और प्रशिक्षकों द्वारा माता-पिता को दी जाने वाली सहायता के बीच सीधा संबंध है, साथ ही माता-पिता किस तरह से अपने बच्चे के शैक्षिक विकास में सहायता और समर्थन कर सकते हैं। शिक्षकों को अपना पूरा ध्यान स्कूल और परिवारों के बीच संचार को बढ़ावा देने पर लगाना चाहिए। जब उनके बच्चे की शिक्षा की बात आती है, तो माता-पिता के विचारों और दृष्टिकोणों को जानना और उन पर विचार करना आवश्यक है। यह अनुशंसा की जाती है कि परिवारों द्वारा प्रस्तुत परिस्थितियों के साथ आमंत्रणों की अनुकूलता बढ़ाने के लिए सहभागिता की मौजूदा तकनीकों को आवश्यकतानुसार अपडेट किया जाए। अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार और स्कूल के बीच संचार की संभावना को बढ़ाने के लिए नई रणनीतियां विकसित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी बच्चे की शैक्षणिक सफलता और समग्र विकास का एक अनिवार्य घटक है। परिवारों और स्कूलों के बीच साझेदारी प्रारंभिक वर्षों के दौरान बच्चे के सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इस अध्ययन ने माता-पिता और स्कूल प्रबंधन दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रारंभिक बचपन की शिक्षा कार्यक्रम न केवल अकादमिक रूप से समृद्ध हों बल्कि बच्चे के समग्र विकास के लिए भी सहायक हों। स्कूल प्रबंधन एक समावेशी और स्वागत करने वाला वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण है जो माता-पिता को अपने बच्चे की शिक्षा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रभावी संचार रणनीतियों को लागू करके, लचीले भागीदारी के अवसर प्रदान करके और विविध परिवारों की ज़रूरतों के अनुरूप संसाधन प्रदान करके, स्कूल माता-पिता को अपने बच्चे की सीखने की यात्रा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बना सकते हैं। स्कूल प्रबंधन से मजबूत नेतृत्व ऐसी प्रणाली बनाने के लिए आवश्यक है जो कई माता-पिता द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं को पहचाने और उनका समाधान करे, जैसे कि सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ, समय की कमी और सांस्कृतिक अंतर। शोध इस बात पर ज़ोर देता है कि जब माता-पिता और स्कूल प्रभावी ढंग से सहयोग करते हैं, तो बच्चे के लिए लाभ दूरगामी होते हैं। इनमें बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन, बेहतर सामाजिक कौशल और अपनेपन और प्रेरणा की अधिक भावना शामिल है। इसके अतिरिक्त, माता-पिता की भागीदारी बच्चों को सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने, लचीलापन बढ़ाने और उनकी भावनात्मक भलाई में योगदान करने में मदद करती है। हालाँकि, सार्थक माता-पिता की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास और नवाचार की आवश्यकता होती है। स्कूलों को बच्चों और उनके परिवारों दोनों की बदलती जरूरतों के प्रति अनुकूलनीय और उत्तरदायी बने रहना चाहिए। प्रभावी स्कूल प्रबंधन को माता-पिता के साथ स्थायी साझेदारी बनाने, निरंतर सहायता प्रदान करने और माता-पिता के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में योगदान करने के अवसर पैदा करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो उनकी क्षमताओं और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ संरेखित हो।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

[1] बेसिक शिक्षा विभाग (डीबीई) (2021): शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी। प्रिटोरिया: डीबीई
[2] रहमान, ए. (2006)। शहर के एड प्राइवेट स्कूल में 3 साल के बच्चों के विकास कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एमए थीसिस, आईईआर, लाहौर: पंजाब विश्वविद्यालय।
[3] एपस्टीन, जे. एल. (1995): स्कूल/परिवार/समुदाय भागीदारी: हमारे साझा बच्चों की देखभाल। फी डेल्टा कप्पन, 76(9),701-712।
[4] एपस्टीन, जे. एल. (2018): स्कूल, परिवार और सामुदायिक भागीदारी: शिक्षकों को तैयार करना और स्कूलों में सुधार करना (दूसरा संस्करण)। न्यूयॉर्क: रूटलेज।
[5] ग्रीन, सी.एल., वॉकर, जे.एम.टी., हूवर-डेम्पसी, के.वी. और सैंडलर, एच.एम. (2007): बच्चों की शिक्षा में भागीदारी के लिए माता-पिता की प्रेरणाएँ: माता-पिता की भागीदारी के सैद्धांतिक मॉडल का एक अनुभवजन्य परीक्षण। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 99(3), 532-544।
[6] हूवर-डेम्पसी, के.वी., वॉकर, जे.एम.टी., सैंडलर, एच.एम., व्हेट्सेल, डी., ग्रीन, सी.एल., विल्किंस, ए.एस. और क्लॉसन, के. (2005): माता-पिता क्यों शामिल होते हैं? शोध निष्कर्ष और निहितार्थ। द एलीमेंट्री स्कूल जर्नल, 106(2), 105-130।

[7] जिमरसन, एस., एगलैंड, बी., स्रौफे, एल.ए. और कार्लसन, बी. (2000): विकास में कई भविष्यवाणियों की जांच करने वाले हाई स्कूल छोड़ने वालों का एक संभावित अनुदैर्ध्य अध्ययन। जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी, 38, 525-549.

[8] मकगोपा, एम. और मोखले, एम. (2013): माता-पिता की भागीदारी पर शिक्षकों की धारणाएँ: दो दक्षिण अफ़्रीकी स्कूलों का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च, 3(3), 219-225

[9] माटेजेविक, एम., जोवानोविक, डी. और जोवानोविक, एम. (2014): पेरेंटिंग स्टाइल, स्कूल की गतिविधियों में माता-पिता की भागीदारी और किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि। प्रोसीडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज, 128, 288-293

[10] मैकडॉवल, पी.एस. और शॉघेंसी, ई. (2017): प्राथमिक विद्यालय-माता-पिता की भागीदारी: शिक्षा धारणाओं और स्कूल विशेषताओं के साथ संबंध। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 110(4), 348-365.

[11] एमएनक्यूब, वी. (2010): दक्षिण अफ्रीका में स्कूल की गतिविधियों में माता-पिता की भागीदारी स्कूल और समुदाय के पारस्परिक लाभ के लिए है। शिक्षा परिवर्तन के रूप में, 14(2), 233-246।

[12] मिसिला, वी. (2012): दक्षिण अफ्रीकी ग्रामीण स्कूलों में अश्वेत माता-पिता की भागीदारी: क्या माता-पिता कभी प्रभावी स्कूल प्रबंधन को बढ़ाने में मदद करेंगे? जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल रिसर्च, 2(2), 303-313

[13] सांग, सी. जे. (2013)। शैक्षणिक प्रदर्शन पर कक्षा के माहौल का प्रभाव

[14] पायनियर ज़ोन, उसिन गिशु काउंटी, केन्या में प्रीस्कूल बच्चों के गणित में। डॉक्टरेट शोध प्रबंध, नैरोबी विश्वविद्यालय, केन्या।